om 6 delhi 1 A B C_Page 1 and 2 16/06/2015 17:40 Page 8

पटना-बिहार। 'गुड बाय डायबिटीज़' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए स्वास्थ्य मंत्री माननीय रामधनी जी, आई.ए.एस. विजय प्रकाश, ब्र.कु. डॉ. श्रीमंत साहू,मा.आबू, ब्र.कु. संगीता व अन्य।

हेलीमण्डी-गुड़गांव। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं हरियाणा की शिक्षा मंत्री, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. संतलाल, ब्र.कु. पूनम व अन्य।

ढ़कौली-चण्डीगढ़। 'सिकरेट्स ऑफ हैप्पीनेस' कार्यक्रम में उपस्थित हैं कुलविन्द्र सिंह सोही, ब्र.कु. हरविन्द्र, ब्र.कु. रजिन्दर व अन्य।

हाथरस-उ.प्र.। वसुन्धरा एन्क्लेव में आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान कर्नल राजेश को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रानी। साथ हैं ब्र.कु. संजय व अन्य।

फरीदाबाद। पुलिस कर्मियों के लिए आयोजित 'तनावमुक्त जीवन जीने की कला' कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं ए.सी.पी. ब्र.कु. सत्यवीर डागर, आई.पी.एस. सुभाष यादव, डी.सी.पी. फूलकुमार, ए.सी.पी. रामेश्वर कुमार लाम्बा व ब्र.कु. सुदेश,बल्लभगढ़।

नवरंगपुर-ओडिशा। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में शादिक आलाम उनकी अपनी धर्मपत्नी के साथ, ब्र.कु. राखी, ब्र.कु. गीता व अन्य।

उस पुनर्जन्म रहित को अर्थ सहित समझें

अर्जुन फिर प्रश्न पूछता है कि क्या ये उत्तम रहस्यपूर्ण योग का वर्णन करने आप सब की तरह पैदा होते हैं, वा जन्म लेते हैं? तब भगवान ने कहा, नहीं। स्वरूप की प्राप्ति शरीर प्राप्ति से भिन्न है। मेरा जन्म इन आँखों से देखा नहीं जा सकता है। मैं अजन्मा, अव्यक्त और शाश्वत् हूँ। अव्यक्त (जिसको व्यक्त शरीर नहीं है) इसलिए तो रथी बनकर के अर्जुन के रथ में आया। मैं विनाश रहित, पुनर्जन्म रहित, प्रकृति को अधीन कर, योगमाया से प्रगट होता हूँ। स्वरूप का जन्म पिण्ड रूप में नहीं होता है। मैंने किसी माता के गर्भ से जन्म नहीं लिया। योग साधना द्वारा अपनी त्रिगुणमयी प्रकृति को `स्व वश' करके प्रगट होता हूँ। इस प्रकार परमात्मा अपने वास्तविक स्वरूप को बताते हैं।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अर्जुन के रथ में विराजमान ``श्रीकृष्ण जो व्यक्त स्वरूप था'' उस व्यक्त स्वरूप में, अव्यक्त रूप में, प्रवेश होता हूँ। इसीलिए गीता में कहीं भी `श्रीकृष्ण उवाच' नहीं आता है, `भगवानुवाच' आता है। क्योंकि श्रीकृष्ण के माध्यम से भी बोलने वाला कौन था? श्रीकृष्ण के माध्यम से बोलने वाला परमात्मा था, जो अजन्मा है। इसीलिए भगवान ने अपना वास्तविक परिचय देते हुए यही स्पष्ट किया कि मैं अजन्मा, अव्यक्त, मैं इन आँखों से नहीं देखा जा सकता हूँ। तुम जिसको देख रहे हो वो श्रीकृष्ण है। लेकिन तुम मुझे इन आँखों से नहीं देख सकते हो। कितना स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण के माध्यम से बोलने वाला कोई और है। मैं अव्यक्त, शाश्वत्, विनाश रहित, पुनर्जन्म रहित, प्रकृति को अधीन करके योगमाया से प्रगट होता हूँ अर्थात् श्रीकृष्ण के तन में मैं प्रगट होता हूँ। तो प्रगट होने वाला कौन था? श्रीकृष्ण की आत्मा नहीं, प्रगट हो करके बोलने वाला परमात्मा था। इसलिए कहा भगवानुवाच, जिसकी पूजा हम भारत भर में करते हैं, ``ज्योतिर्लिंगम के रूप में''। ज्योतिर्लिंगम माना जो ज्योति का स्वरूप है। जो ज्योति का एक प्रतीक है, वो प्रकाशमान अव्यक्त स्वरूप है। जिसकी पूजा हमने ज्योतिर्लिंगम के रूप में की है। आज भी पूरे भारत भर में बारह ज्योतिर्लिंगम का विशेष महत्व है, जो महान तीर्थ स्थान बन गए हैं। जिसको कहते हैं देवों का भी देव ``महादेव'' अर्थात् जिसकी पूजा स्वयं देवताओं ने भी की है इसलिए कुरुक्षेत्र के मैदान में आज भी थणेश्वर का मंदिर है। जहाँ दिखाते हैं कि महाभारत युद्ध के पहले श्रीकृष्ण ने भी स्वयं शिव की पूजा की और पाण्डवों से भी कराई। उसके बाद हर-हर महादेव अर्थात् युद्ध आरम्भ हो गया। तो श्रीकृष्ण ने स्वयं शिव की पूजा क्यों की? अगर श्रीकृष्ण भगवान थे तो उन्हें शिव की पूजा नहीं करना था। इसी तरह रामेश्वरम् में चले जाओ जहाँ दिखाते हैं कि रावण से युद्ध करने से पहले स्वयं श्रीराम ने भी शिव की पूजा की। श्रीराम का भी जो ईश्वर है और उसकी पूजा करके उसके बाद हर-हर महादेव अर्थात् बुराइयों के ऊपर सम्पूर्ण विजय प्राप्त करना। हर-हर-महादेव अर्थात् हरना, समाप्त करना वा मिटाना। महादेव की शक्ति अर्थात् जो देवों का भी देव महादेव।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

जिन देवियों की आज हम पूजा करते हैं, अम्बा, दुर्गा, ये सब देवियां कौन हैं? कहा जाता है कि संसार में जब असुर बढ़ गए थे तो शिव ने अपनी शक्तियों को उत्पन्न किया था। असुर संहारिणी शिव शक्तियों के रूप में आज भी उनका गायन करते हैं। जो देवों का भी देव, देवियों का भी देव वो है महादेव। जिसकी मान्यता संसार के सभी आत्माओं ने स्वीकार की है।

विश्व परिवर्तन की नींव है स्व-परिवर्तन

कहते हैं कि जहां चाह है, वहां राह है अर्थात् हौसला यदि बुलंद हो और कुछ करने की प्रबल इच्छा अंदर हो तो इंसान सब कुछ हासिल कर सकता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि हम सभी नित्य प्रति पल कई मायनों में खुद को बदलना चाहते हैं, लेकिन यह संभव नहीं है कि हर बार हम जो हासिल करना चाहते हैं वह हमें मिले। इसका मूल कारण यह है कि हमारे आंतरिक परिवर्तन का सीधा आधार हमारी इच्छा शक्ति और दृढ़ आत्मबल पर निर्भर है, अतः एक बार यदि हम अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ कुछ परिवर्तन करने का तय कर लेते हैं, तो हम बड़ी आसानी से अपने नियत लक्ष्य को हासिल कर सकते हैं।

मसलन मान लीजिए कि किसी व्यसनी व्यक्ति ने दृढ़ता के साथ यह मन में ठान लिया कि मुझे आज से, अभी से शराब को छूना तक नहीं है, तो उसी घड़ी से स्वतः ही उसके भीतर ऐसे हार्मोनल परिवर्तन होते हैं, जो प्राकृतिक रूप से ही उसे परिवर्तन करने में मदद करते हैं। परंतु यदि उसकी दृढ़ता में कुछ कमी रह जाती है तो वह बार-बार लड़खड़ाएगा और हतोत्साहित होकर बड़ी जल्दी ही परिवर्तन करने के सारे प्रयासों को छोड़ देगा।

इसलिए यह नितांत आवश्यक है कि आत्म परिवर्तन के हमारे रास्ते में आनेवाले हर तूफान और चुनौतियों का सामना करने के लिए हम एक दृढ़ चट्टान की तरह खड़े रहें और अपने आप से यह वादा करें कि अब से हम हमारी नकारात्मक आदतों या संस्कारों के गुलाम बनकर कठपुतली का नाच नहीं नाचेंगे। हममें से अधिकांश लोगों को यह अनुभव होता है कि ज्यों ही हम परिवर्तन करने के विषय में अपने आप से कोई वादा करते हैं, ठीक उसी घड़ी से हमें बाधाओं का सामना करने की शुरुआत कर देनी पड़ती है ठीक है ना? इसका मूल कारण है हमारे ही अच्छे के लिए स्वेच्छा से किए निर्णयों के कार्यांवयन को स्थगित करने की हमारी बुरी आदत, जी हाँ! जब हम बहुत समय के पहले से खुद को किए हुए वायदे पूरे कर पाने में असफल होते रहते हैं, तो उसके परिणामस्वरूप हमारे आत्मविश्वास का स्तर बहुत निम्न हो जाता है और नकारात्मकता हमें इस कदर वश कर लेती है कि हम वायदा करने के साथ ही असफलता के विचार करना शुरु कर देते हैं अर्थात् यह कि परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाने के पहले ही हम अपनी हार को स्वीकार कर लेते हैं। बार-बार मिली निराशा के परिणामस्वरूप हम फिर खुद को और अन्य को यह कहना शुरु कर देते हैं कि शायद मेरे लिए आत्म परिवर्तन की यह शुभ घड़ी नहीं थी, पर कोई बात नहीं! मैं वापस कोई शुभ मुहूर्त पर अपना परिवर्तन करने की सोचूंगा। यह बार-बार गिरना, असफल होना और फिर से उत्साहित होकर उठने का सिलसिला तब तक चलता रहता है जब तक कि हम यह निर्धारित नहीं करते हैं कि चाहे जो भी हो जाए, आकाश भी गिर क्यों न जाए पर मुझे अभी गिरना नहीं है, मुझे अभी लड़खड़ाना नहीं है, बस आगे ही आगे मंज़िल की ओर बढ़ते जाना है। हमारा यह निर्धारित और दृढ़ मनोबल स्वयं के साथ-साथ समाज के अंदर भी बड़े पैमाने पर परिवर्तन लाएगा। याद रखें, यदि हम बदलेंगे, तो हमारे आसपास का संसार भी बदल जायेगा, तो चलिए पहले स्व का परिवर्तन करें, ताकि समस्त विश्व का परिवर्तन हो। - ब्र.कु. निकुंज,मुम्बई,घाटकोपर